पारिवारिक एकता लहर

तारीख 09–12–1995 से 12–12–1995 तक

महाबीर सत्संग सभा

भूमिका

पारिवारिक एकता लहर का आयोजन सजनों के गृहस्थाश्रमों में शांतमय वातावरण के निर्माण हेतु करना आवश्यक समझा गया ताकि गृहस्थियों अर्थात् पति–पत्नियों को गृहस्थाश्रम के प्रति जागरूक बनाया जा सके। पारिवारिक एकता लहर में पांच सौ नवविवाहित और विवाह के नज़दीक युवा अवस्था के लड़के–लड़कियों, (तीस साल की आयु तक के) सजनों ने भाग लिया। उनको उनके अपने प्रति, बच्चों के प्रति और बुज़ुर्गो के प्रति फ़र्ज अदा के बारे में भिन्न–भिन्न युक्तियों द्वारा समझाने का यत्न किया गया ताकि वह अपने अपने परिवारों में जा कर सुखमय जीवन बिताने योग्य हों और यश कीर्ति के पात्र बन सकें। इस आयोजन में सम्मिलित सजनों में गृहस्थाश्रम को सुचारू रूप से चलाने की उत्कंठा देख प्रतीत हुआ कि सब सजन इस प्रयत्न को लाभकारी समझ, हर्षोल्लास से बताई युक्तियों को समझने, अपनाने के लिये तत्पर हैं। इस आयोजन के पश्चात, जो जो सजनों के आपसी और पारिवारिक जनों के प्रति व्यावहारिक स्वभाव में तबदीली आई, उसको देखते हुए यह महसूस हुआ कि अगर हर माता पिता अपने बच्चों को विवाह से पहले गृहस्थाश्रम के प्रति पूरा ज्ञान दें तो बच्चे शादी के उपरांत सुखी, शांतमय जीवन, व्यतीत कर सकते हैं और जो इस समयकाल में परिवारों में लड़ाई–झगड़े, भिन्न–भेद का वातावरण अधिकतर सजनों को दुखद अवस्था में घेरे हुए है, उससे बचे रह सकते हैं। इसलिये इस पारिवारिक एकता लहर का पुस्तक के रूप में आप सजनों तक पहुँचाना आवश्यक समझा गया ताकि इसमें लिखित ज्ञान को समझ, आप सजन भी अपने पारिवारिक जीवन में सुख शान्ति से रह सकें।

विषय-सूची

भूमिका

	विषय	पृष्ठ न०
1.	भारे वाले कुएं उत्ते लगा बगीचा कैसा सुन्दर ओ मान	1
2.	पारिवारिक एकता लहर निमन्त्रण पत्र	3
3.	पारिवारिक एकता लहर	6
4.	दण्डोत वन्दना	13
5.	आओ सुखी गृहस्थ जीवन की ओर बढ़े	15
6.	प्रातः कालीन पाठ का आवाह्न	20
7.	श्री रामचन्द्र जी दियां हक्लां देखो	22
8.	ट्रेनिंग के दौरान सावधानी हेतु	24
9.	बच्चों द्वारा श्री साजन जी का धन्यवाद	26
10.	सजन भाव पर समझौता व अभ्यास	28
11.	आत्मिक–परमात्मिक एकता–सुखी जीवन का आधार	34
12.	नरसी भक्त की कहानी	36
13.	गृहस्थ–आश्रम बनता किस तरह है ?	38
14.	ओ स्कूल खुलया जे	44
15.	"सजन शब्द" सिठनियां	45
16.	अच्छी संतान प्राप्ति व स्वस्थ समाज का निर्माण	48
17.	आना अकेला फिर जाना अकेला	55
18.	कवित्त–कुर्सी ते बैठे परवरदिगार	56
19.	गृहस्थाश्रम में प्रवेश से पूर्व अर्थात् युवावस्था में ही उत्तम चरित्र निर्माण श्रेयस्कर है	57
20.	किस्मत दा ताला खोल रे	63

	विषय	पृष्ठ न०
21.	पिछली बात न फोल ओ बन्दे	65
22.	मेरे साजन जी का द्वारा	67
23.	सर्व साजन ही साजन	69
24.	कव्वाली–वक्त दे मुताबिक सजन	71
25.	हनुमान साजन जी आवे	73
26.	सुखी वैवाहिक जीवन	76
27.	हाँ हाँ पहुँचे ने विच दरबार	79
28.	पति पत्नी में एकता हेतु अभ्यास	81
29.	कवित्त–गृहस्थ–आश्रम में रैहदियां	85
30.	बच्चों द्वारा माता पिता को सम्बोधन	88
31.	दरबार दे अन्दर पहुँचदियां	90
32.	ओ इन्सान जगत वालियो होश विच आना पड़ेगा	91
33.	फिर जे संकल्प नूं जितना चाहो	92
34.	प्रसंग चलान लगे हनुमान जी	94
35.	गरुड ताड़ ताड़ तक्के साजन जी दे वल	96
36.	स्वार्थ व परमार्थ में बाधक विकारों से बचाव युक्ति	98
37.	कलुकाल दी कहानी – सुनो साजन जी कलुकाल दी	110
38.	रविदास की कहानी	112
39.	सतवस्तु के कुदरती शास्त्र को पढ़ने व समझने की युक्ति	115
40.	कुदरती साइन्स द्वारा मानव शरीर नियन्त्रण प्रणाली	118
41.	झलकी	127
42.	पति पत्नी एकता आश्वासन	129
43.	सच्चे पातशाह जी द्वारा अनमोल वचन	131
44.	गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित श्री साजन जी के अनमोल वचन	139
45.	बोर्डों में गृहस्थाश्रम की युक्तियाँ	143
46.	प्रश्नोत्तर द्वारा गृहस्थाश्रम सम्बन्धी जीवनोपयोगी ज्ञान	152
47.	मानव के गृहस्थ जीवन के प्रति कर्तव्य एवं दायित्व	157
48.	स्वार्थ और परमार्थ में सफलता प्राप्ति हेतु यत्न व अभ्यास	163
49.	भजन	
	I) मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है	166
	II) साजन जी है हम सब के	168
	III) मै साजन हूं तुम सजन हो	170
	IV) मन मानव में वह शक्ति है	172
50.	प्रेम भाव	173
51.	चेतावनी	174
52.	आरती	177

Request for this book

Email
info@satyugdarshantrust.org